THE LEARNING OUTCOME FRAME OF UG COURSE OF FOUNDATION COURSE PAPER – HINDI

B.Sc./BHSC I, II & III Year

F.C. Paper-I

हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य

हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। भाषा वास्तव में संपूर्ण ज्ञान एवं व्यक्तित्व का आधार होती है। भाषा का शिक्षा से घनिष्ट संबंध है। किसी भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण कार्य में भाषा की शिक्षा का अपना विशिष्ट महत्व होता है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा में हिन्दी भाषा की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। इसका उद्देष्य विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा और संस्कृति से जोड़े रखते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है। भाषा जितनी सषक्त और परिभाषित होती है ज्ञान उतना ही शुद्ध और अर्थपूर्ण हो जाता है। यह भी सत्य है कि ज्ञान की धरोहर को आगे बढ़ाने व नई जानकारियों को सामाजिक संदर्भ में समझ सकने का आधार तैयार किये बिना हम अपनी जड़ो से हिल जायेंगे अर्थात् भाषा की प्रगति हमारे राष्ट्र की प्रगति का आधार है।

भाषा शिक्षण के उद्देष्य–1. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सर्वांगीण विकास
2. विज्ञान के विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
3. विद्यार्थियों को साहित्य सृजन की प्रेरणा प्रदान करना
4. विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता का विकास करना तथा साहित्य के प्रति रूझान एवं अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता प्रदान करना

विद्यार्थी एक निष्क्रिय श्रोता नहीं अपितु सक्रिय प्रतिभागिता द्वारा पूर्ण ध्यान केन्द्रित करते हुए सीखने का प्रयास करता है। हिन्दी भाषा एवं नैतिक मूल्य के पाठ्यक्रम में छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भों जयषंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निरालाजी की कविताएं हैं तथा महादेवी वर्मा के निबंध भी समाहित किए गए हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से न केवल महान उपन्यासकार और लघुकथा लेखक प्रेमचंद की कहानी भारतवासियों बल्कि बाहर के लोगों का भी दिल जीता प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोषी जी का व्यंग्य पाठ्यक्रम को प्रभावी और पठनीय बनाता है।

हिन्दी भाषा के ज्यादातर शब्द संस्कृत से आये हैं तो उसके साथ ही अंग्रेजी, उर्दू, फ़ारसी के शब्द भी हिन्दी में समाहित हैं। महात्मा गांधी की आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोग तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर, स्वामी विवेकानंद, प्रमुख आविष्कार, हमारा सौरमण्डल, समाचार–पत्र, पत्र–लेखन से विद्यार्थी पत्रिका या अखबार में दिलचस्पी लेकर वे सजग और जिज्ञासु बन सकते हैं।

हमारी सांस्कृतिक एकता, धर्म, लोक कला, लोक संस्कृति द्वारा विद्यार्थियों में अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति आस्था का भाव जागृत होगा तथा वे यथार्थ जगत से परिचित होंगे। सांस्कृतिक विचारधारा तथा जीवन मूल्यों से विद्यार्थियों में संवेदनशीलता का विकास होगा।

पर्यायवाची, विलोम तथा संधि, समास, वर्ण–विन्यास से नए शब्दों और वाक्यांशों से परिचित होंगे। वर्तनी के साथ वाक्यांशों का ज्ञान भी उपलब्ध होगा जिससे विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से पढ़ने और अपनी बातों को अपनी भाषा में लिख पाने की क्षमता विकसित कर सकेंगे तथा व्याकरण के द्वारा भाषा की बारीकियों के प्रति संवेदनशील बन सकेंगे। हिन्दी भाषा के विभिन्न रूपों और अभिव्यक्तियों को जानना और भाषा के स्वरूप और व्यवस्था को समझ कर विद्यार्थी बेहतर पाठक और सक्रिय शिक्षार्थी बन सकेंगे यह एक सकारात्मक कदम है।

विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए पाठ्य सामाग्री सरल एवं बोधगम्य तरीके से उपलब्ध की गई है जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में इस तरह से परिवर्तन किया जाये कि वह व्यावहारिक हो और सामाजिक हित के लिए हों तथा विद्यार्थी अपने जीवन को बेहतर बना सकें।